Global Axis
International journal of Multidisciplinary Studies
Website - globalaxisjournal.org

व्यंगात्मक दुनिया में हरिशंकर परसाई

अरुण कुमार जायसवाल
सहायक प्राध्यापक (अ. वि.), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरगोन, (म.प्र.)
Email–arunkumarjaiswal96@gmail.com

सारांश :- हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक हरिशंकर परसाई ने अपने व्यंगात्मक लेखों के माध्यम से एक अलग पहचान बनाई और स्वतंत्रता के बाद भारत में हुई सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं को उजागर किया। यह सारांश एक शोध अभियान को समझता है जिसका लक्ष्य परसाई की व्यंग्य साहित्य में व्याप्त सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करना है शोध का लक्ष्य परसाई द्वारा नियोजित अंतर्गत विषयों रूपांकन और अलंकारिक उपकरणों को समझाता है जो वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक परिवेश की आलोचना करते हैं शोध भारतीय समाज और राजनीति पर परसाई के व्यंग्य की स्थाई प्रासंगिकता और प्रभाव का पता लगाने के लिए पाठ्य विश्लेषण और ऐतिहासिक संदर्भिकरण को मिलाकर एक बहुआयामी पद्धति का उपयोग करता है। इस प्रयास को शुरू करके हिंदी साहित्य व्यंग्य और सामाजिक राजनीतिक टिप्पणियों पर विद्वतापूर्ण बहस को बढ़ावा देने के लिए, परसाई के व्यावहारिक व्यंग के लेंस के माध्यम से भारतीय समाज और राजनीति की जटिलताओं के साथ आलोचनात्मक जुड़ाव को बढ़ावा देना चाहते हैं। हिंदी साहित्य के मशहूर लेखक हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में अपनी पिक्चर बुद्धि और गहन विश्लेषण के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद भारत के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य का विश्लेषण किया। यह सारांश एक शोध की पेशकश करता है ,जिसका उद्देश्य परसाई के व्यंग्य साहित्य की गहराई खोजना है ताकि इसके संक्षिप्त सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को खोजा जा सके।

शब्द-कुंजी:- हरिशंकर परसाई, व्यंगात्मक लेखन, सामाजिक राजनीतिक विश्लेषण, सामाजिक दृष्टिकोण, विधा वैविध्य, सर्वेक्षण लघुता, समसामयिक वातावरण, रेखा चित्र आदि।

प्रस्तावना :- व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय - स्वातंत्र्योत्तर युग में व्यंग्य विधा को सही शैली में स्थापना देने में जिन व्यंग्य कारों की महत्ता उल्लेखनीय है उनमें हरिशंकर परसाई का नाम बड़े गर्व के साथ लिया जाता है। विद्या के रूप में व्यंग को स्थापना देने वाले रचनाकार परसाई के जी वन परिचय के अंतर्गत ही उनकी समग्र कठिनाइयां तथा संघर्ष उभर कर हमारे सामने आते हैं परसाई जी का जन्म 22 अगस्त 1924 में जमानी गांव मैं हुआ इनके दो भाई वह तीन बहनों सहित बड़ा परिवार है आजीवन अविवाहित रहने वाले परसाई जी का जीवन बड़ा संघर्षमय रहा है। 18 वर्ष की आयु में जंगल विभाग (इटारसी के पास) किसी गांव में नौकरी की थी वहां लिखने के चितेरे को चौन नहीं मिला तथा खंडवा में 6 महीने के लिए अध्यापन कार्य किया। उसे छोड़कर सन 1941–43 मैं 2 वर्ष के लिए जबलपुर के स्पेंस ट्रेनिंग कॉलेज में शिक्षण कार्य किया। 1943 से ही जबलपुर में मॉडल हाई स्कूल में अध्यापन कार्य किया। 1952 में इस्तीफा। उसके बाद सन 1953 से 1957 तक प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाया। फिर नौकरी को नमस्कार। आबाद गति से बढ़ते हुए लेखक ने एक बार फिर से नागपुर से एम ए तथा सन 1958 में जबलपुर विश्वविद्यालय से डि.लीट की उपाधि प्राप्त की। अध्ययन से परिपूर्ण होने के बाद अपनी लेखनी की धार को व्यंग के सागर में खुलकर चलना प्रारंभ कर दी। जिसके फल स्वरुप सन 1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1962 में विश्व शांति सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य के नाते रुस की यात्रा। जीवन की एक सुदूर यात्रा करने के बाद हरिशंकर पर साइन जी ने आजीवन अविवाहित रहकर लेखन के क्षेत्र में हिंदी साहित्य जगत में एक भूचाल मचा दिया, संवेदन की विलक्षण दुनिया और संप्रेषण की अनूठी भंगिमा द्वारा परसाई जी ने स्वस्थ हैं और प्रतिबद्ध व्यंगकार की तमाम शर्तों को पूरा किया। उनके लेखन में निरलापन है और कबीर पन भी। उनके प्रश्नों में हमारी बौद्धिक चेतना को परिवर्तनोन्मुख करने की क्षमता है। और उनका प्रहार विशिष्ट भावनात्मक ईमानदारी का शुभ परिणाम है। हिंदी साहित्य की भूल भुलैया में हरिशंकर परसाई व्यंग के एक प्रकाश स्तंभ के रूप में खड़े हैं जो अपनी विशिष्ट बुद्धि और अंतर दृ ष्टि से स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज और राजनीति की जटिलताओं को उजागर करते हैं। जैसे–जैसे मैं परसाई के व्यंग्य साहित्य

Global Axis International journal of Multidisciplinary Studies

में छिपे हुए सामाजिक और राजनीतिक विचारों को खोजता हूं मुझे उनके लिखे का पाठकों विद्वानों और विचारकों की पिछली पीढ़ियों पर गहरा प्रभाव याद आता है। यह शोध पत्र परसाई जी की साहित्यिक विरासत की निरंतर प्रासंगिकता का प्रमाण है जो आज की बहस में गूंजता है। यह प्रयास परसाई के व्यंग्य की परतों को उड़ाने का प्रयास करता है जो हास्य के नीचे छिपी सच्चाइयों आलोचनाओं और उत्तेजनाओं को उजागर करता है। जैसे–जैसे मैं परसाई के साहित्यिक कोष की ओर बढ़ता हूं मुझे व्यंग्य की शक्ति की याद आती है जो समाज को चित्रित करती है उसके गुणों, दोषों,विरोधाभासों और आकांक्षाओं को दिखाती है। परसाई की रचनाओं में सिर्फ मनोरंजन नहीं मिलता बल्कि मानवीय स्थिति सट्टा की मूर्खता और सामाजिक व्यवस्था के पेचीदगियों पर भी गहरी टिप्पणी मिलती है या शोध एक विनम्र प्रयास है कि परसाई की बौद्धिक क्षमता को सम्मान दें और उनके व्यंग्य जगत को संजीव करने वाले विचारों की विशाल टेपेस्ट्री से जुड़े। यह हमें समाज और राजनीति के बारे में हमारी समझ को बदलने वाले आख्यानों को खोजने प्रश्न पूछने और उनसे आलोचनात्मक रूप से जुड़ने का निमंत्रण देता है। मैं जटिलताओं और चुनौतियों को जानता हूं ,जैसे–जैसे मैं इस विद्वतापूर्ण प्रयास की शुरुआत करता हूं फिर भी यह जानते हुए की यात्रा गंतव्य की तरह समृद्ध है मैं गहरी जिज्ञासा और बौद्धिक रोमांच से भर गया हूं। इस शोध पत्र को प्रस्तुत करते समय मैं हरिशंकर परसाई को उनकी अनमोल विरासत के लिए धन्यवाद देता हूं, मैं उन विद्वानों और विचारकों के प्रति भी धन्यवाद देता हूं ,जो मार्ग प्रशस्त किया है और उन पाठकों के प्रति भी धन्यवाद देता हूं जो उनके कालजई व्यंग के पन्नों से प्रेरणा पाते हैं। परसाई के व्यंग्य साहित्य की यह खोज लोगों को हमारे समय की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर अधिक स्पष्ट विचार करने आलोचनात्मक सोच करने और सार्थक बहस करने के लिए प्रेरित करती है।

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य :- एक परिचय - हिंदी साहित्य में हरिशंकर परसाई को उनके तीक्ष्ण व्यंग के लिए जाना जाता है जो उनके समय के सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर प्रकाश डालता है। उनकी रचनाएं हास्य बुद्धि और गहन टिप्पणी का एक अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करती है, जो भारतीय समाज और राजनीति की जटिलताओं में महत्वपूर्ण समझा देती है। इस शोध प्रस्ताव का उद्देश्य हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य का विश्लेषण करना है जो सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों से चित्रित करता है और स्वतंत्रता के बाद भारत के सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य को समझने में इसके महत्व पर ध्यान देता है। 1924 में जन्मे हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य में एक महान व्यक्ति बन गए, विशेष रूप से व्यंग में उनकी क्षमता के लिए जाना जाता है। भ्रष्टाचार नौकरशाही और सामाजिक मानदंडों से लेकर राजनीतिक विचारधाराओं और मानवीय कमजोरी तक उनके लिखे में कई विषय शामिल हैं। परसाई जी ने अपने व्यंगात्मक लेंस के माध्यम से आम सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था की तीखी आलोचना की है एवं वर्तमान व्यवस्था को चुनौती दी और अपने पाठकों को सोने को प्रेरित किया।

उद्देश्य:- इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित है :

- हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य का व्यवस्थित विश्लेषण करते हुए सामाजिक और राजनीतिक विषयों की खोज पर ध्यान देना।
- परसाई द्वारा अपने व्यंग्य कार्यों में उपयोग किए गए आवर्ती रूपांकनो, कहानी, तकनीको और अलंकारिक रणनीतियों को समझना।
- परसाई के व्यंग को स्वतंत्रता के बाद के भारत के विस्तृत ऐतिहासिक और राजनीतिक परिदृश्य से जोड़ना।
- परसाई की गंगा आत्मक टिप्पणी के प्रभाव और समकालीन भारतीय समाज और राजनीति पर उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

यंग्य विनोद:- व्यंग्य विनोद तो परसाई जी के निबंधों का जीवन है बिना व्यंग के उनके निबंध संग्रह ऐसे लगते हैं जैसे बिना हथियार के फौजी लड़ाई के मैदान में हो। सामाजिक विसंगति हो चाहे राजनीतिक अवसरवादिता हो चाहे आर्थिक विषमता या सांस्कृतिक विखंडता हो या धार्मिक पाखंड। परसाई जी ने सभी क्षेत्र में अपनी लेखनी को चलाया है तथा एक सच्चे पथ प्रदर्शक का कार्य किया है। राजनीति की तस्वीर देखिए: "राजनीतिक अवसर बादिता की पुंगी जब इसी फेफड़ों की स्वास्थ्य से बजती है जिसमें सट्टा का दम हो तब मतवाद सिद्धांत और आईडियोलॉजी का कोई उपयोग नहीं रहता है।" इसी तरह राजनीति की खुली पोल तथा

Global Axis International Journal of Multidisciplinary Studies

अनैतिकता देखिए: "कश्मीर के वे समाज कल्याण अधिकारी समाज के पीड़ितों का कल्याण चरस से करते रहे होंगे। दो देशों में सबसे मजबूत दोस्ती स्मगलिंग से ही होती है तस्कर हमारे सबसे अच्छे मैत्री प्रतिनिधि हैं।"

नाटकीयता:- कठोप कथन एवं बातचीत का स्वाभाविक आनंद परसाई जी के प्रारूप सभी निबंध संग्रहों में सत्य का यथार्थ चित्रण किया है दैनिक जीवन से लेकर अंतरराष्ट्रीय तक की व्यापक सामग्री को संवादों में इस तरह व्यक्त करते हैं जिससे उनकी नाटकीयता में चार चांद लग जाते हैं प्रत्येक व्यंग निबंध में सामाजिक विशेषताएं मौजूद हैं संवादों में नाटक गीत के साथ–साथ कथन वक्रता भी मौजूद हैदृ "एक दोस्त पान के ठेले के पास चौराहे पर खड़े थे– बोला एक सिगरेट तो पिलाओगे ना। मैंने कहा—मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है? वह तपाक से बोला — पिलाना तो नहीं छोड़ा।"

"साब, उसे देखो कैसी मटकती है।"

"अरे, मगर इस सामने वाली को तो देख। दो बार पूरी रोटी खा ले तो पूरी हो जाए।"

"मगर साब सुना है ,तहसीलदार साब भी तबीयत फेंक देते हैं "

"अरे ,तो थ्रू प्रॉपर चौनल ! सरकारी नियम हम थोड़े ही तोड़ेंगे।"

ऐसे ही ना जाने कितने उदाहरण हम देख सकते हैं जिसमें परसाई की नाटक गीत उभर कर सामने आती है।

परसाई जी ने आज तक के नेताओं को दो मुंह की धम्मी सी प्रवृत्ति को भी रेखाचित्र में कसने का प्रयास किया है व्यंग के क्षेत्र में वैसे ही रेखाओं का अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि जितनी भी रचनाएं व्यंग्य से संबंधित होती हैं उनके प्रथम कांवर पर ही चित्रों के माध्यम से उसे पुस्तक के अंदर की सामग्री का पता लग जाता है। प्रस्तों के ऊपर ऐसी मुद्राएं अंकित की जाती है जिससे एक उपवास की स्थिति का आभास होता है इसे ही सच्चे व्यंगकार की रेखाचित्र रूपी विद्या का अंदाज होता है। एक सशक्त व्यंगकार ही रेखा चित्र का सफल और सार्थक प्रयोग कर सकता है। रेखा चित्र में किसी भी ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया जाता है जिसकी स्मृति हमें प्रायरू उद्वेलित करती है जो व्यक्ति किन हैं अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण हमारे ऊपर गहरी छाप छोड़ दें, "हम उसी को रेखाचित्र प्रस्तुत करते हैं तथा यही बात स्मरण के संबंध में है रेखाचित्र साधारण से साधारण का भी हो सकता है।" जैसे –"मैं समझ गया हजारों साल पहले ऊंची जातियों ने यह मान लिया था जो कुछ भी हो समझ में उपलब्ध है हमारा है। वंचित रहना ही नीची जातियों का धर्म है। प्रतिष्ठा धन सब ऊंची जातियों का अधिकार है। स्कूल में मेरे साथ नई का एक लड़का पढ़ता था वह मुझसे ज्यादा होशियार था मुझे गणित पढ़ाता था और नकल भी कराता था। वह आता तो कहता हरिशंकर नमस्ते! मेरे चाचा ने उसे डांटा ऋतू नई होकर नमस्ते करता है। पा लगी किया कर उन्हें क्या पता कि अब श्रेष्ठ ब्राह्मण के भतीजे को वह नाई पढ़ाता और नकल कराता है।"

निष्कर्ष:- हरिशंकर परसाई पर शोध प्रकाशन का संग्रह हिंदी साहित्य में उनके योगदान की निरंतर विरासत और गहरा प्रभाव का प्रमाण है। परसाई के व्यंग्य की जटिल परतों को खोजने के लिए शोधकर्ताओं ने जीवनी संबंधित अध्ययनों आलोचनात्मक विश्लेषण और विद्वत्ता परीक्षाओं का उपयोग किया है। विद्वानों और पाठको को आज भी परसाई की तीक्ष्ण बुद्धि गहन विचार और साहित्यिक टिप्पणी स्वतंत्रता के बाद भारत के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य पर आकर्षित करती है। उन्हें हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज की मूर्खताओं और लक्षण को चित्रित करने की उनकी अद्भुत क्षमता उन्हें हिंदी साहित्य में एक महान व्यक्ति बनाती है। प्रत्येक प्रकाशन एक कंपकपाता हुआ गणतंत्र ,से लेकर विकलांग राजनीति, भेड़ और भेड़िए, विकलांग श्रद्धा, आदि परसाई के व्यंग हमारी सामाजिक राजनीतिक विश्लेषण सामाजिक दृष्टिकोण और व्यंगात्मक लेखन के बारे में हमारी समझ को बढ़ाता है जैसा कि हम हरिशंकर परसाई को समर्पित शोध प्रकाशनों पर विचार करते हैं यह स्पष्ट होता है कि उनकी विरासत पीडिया से आगे बढ़ती है जो आलोचनात्मक अध्ययन बौद्धिक प्रवचन और भारतीय समाज और राजनीतिक जटिलताओं के साथ रचनात्मक जुड़ाव को प्रेरित करती है। अपने कालजई व्यंग के माध्यम से परसाई जी ने साहित्य की शक्ति की गहरी सराहना को बढ़ावा देना जारी रखा। जो विचार को उकसाना रूढ़ियों को चुनौती देना और मानवीय स्थिति को उजागर करता है। निश्चित ही समकालीन हिंदी व्यंग्य निबंधकारों में परसाई

Global Axis International Journal of Multidisciplinary Studies

जी शीर्षस्थ हैं। उनके व्यंग्य के पेनेपन मैं किसी विशेष गंध की वजह से ही निखार आता है। समकालीन व्यंग कारों में शीर्षास्थ हैं, क्योंकि उनके व्यंग्य देश के नक्शे पर व्याप्त कुरीतियों का पर्दाफाश करता और परिवर्तन का संदेश देता है। इनका लेखन सिर्फ देश की अधुनातन स्थितियां तथा विसंगतियों का पर्दाफाश ही नहीं करता अपितु पाठक की मन चेतना को झकझोर कर परिस्थितियों में परिवर्तन के लिए उन्हें प्रेरित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. हिंदी व्यंग्य के प्रतिमान डॉक्टर बालेंदु शेखर तिवारी पृष्ठ 12(1988) ।
2. सदाचार का ताबीज दृहरिशंकर परसाई पृष्ठ 11 (1967) ।
3. पगडंडियों का जमानादृहरिशंकर परसाई पृष्ठ 18 (1966) ।
4. हिंदी व्यंग्य के प्रतिमान डॉक्टर बालेंद्र शेखर तिवारी पृष्ठ 19 (1988) ।
5. हिंदी के व्यंग्य निबंधदृ डॉ आनंद प्रकाश गौतम पृष्ठ 96 (1990) ।
6. मिश्रा सुधीर(2003) हरिशंकर परसाईः एक साहित्यिक जीवनी ।
7. श्रीवास्तव आर.के.(एड) (2000) हरिशंकर परसाई :व्यक्तित्व और कृतित्व ।
8. परसाई हरिशंकर (निबंध ,लघु कथाएं और लेखों के संग्रह सहित विभिन्न कार्य) ।
9. वर्मा देवेंद्र (1996) हरिशंकर परसाई एक अध्ययन ,इलाहाबादः किताब घर प्रकाशन ।
10. अग्रवाल रमेश चंद्र (2007) हरिशंकर परसाई :व्यक्ति और व्यक्तित्व ,नई दिल्ली : प्रशासन संस्थान ।

Global Axis International journal of Multidisciplinary Studies